इक्षु समाचार

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ

वर्ष 6 अंक 2 अक्टूबर 2011 - मार्च 2012

संस्थान के नये निदेशक – डॉ. सुशील सोलोमन

सुविख्यात जैवरसायनविद डा. सुशील सोलोमन ने 22 दिसम्बर 2011 को संस्थान के निदेशक का पद–भार ग्रहण किया। डा. सोलोमन ने इलाहाबाद विश्वविद्यालय से 1972 में विज्ञान में स्नातक तथा 1974 में जैवरसायनशास्त्र में स्नातकोत्तर उपाधि प्राप्त करने के पश्चात, पंजाब कृषि विश्वविद्यालय, लुधियाना से 1978 में पीएचडी की उपाधि प्राप्त की। वर्ष 1977 में भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद की कृषि शोध सेवा प्रारम्भ करने के उपरान्त, डा. सोलोमन ने गन्ना में सुक्रोज का स्तर सुधारने, कटाई उपरान्त शर्करा की हानि रोकने तथा मिलों का पेराई सत्र बढ़ाने के लिए समग्र पश्च–कटाई प्रबन्धन तकनीक विकसित करने में उल्लेखनीय योगदान दिया है। उन्होंने गन्ना कृषि में पादप वृद्धि नियामकों के प्रयोग को नये आयाम प्रदान किये। इस महत्वपूर्ण योगदान के लिए उनको अनेक राष्ट्रीय तथा 5 अन्तर्राष्ट्रीय पुरस्कारों से सम्मानित किया गया। राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय वैज्ञानिक समितियों में विभिन्न पदों से सम्बद्ध रहते हुए, डा. सोलोमन ने 10 से अधिक राष्ट्रीय एवं अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठियों का सफलतापूर्वक आयोजन किया। उन्होनें गन्ने पर 10 पुस्तकें तथा 130 से अधिक शोध पत्र, शोध समीक्षाएं एवं तकनीकी बुलेटिन प्रकाशित किये हैं। डा. सोलोमन अन्तर्राष्ट्रीय गन्ना प्रौद्योगिकी समिति के सचिव तथा भारतीय गन्ना प्रौद्योगिकी समिति एवं भारतीय कृषि जैवरसायन समिति के आजीवन सदस्य हैं। डा. सोलोमन शुगर टेक जर्नल के संपादक हैं तथा उन्होंने पाँच अन्तर्राष्ट्रीय शर्करा सम्मेलनों का आयोजन भी किया है। डा. सोलोमन ने चीन, मिस्र, ब्राजील तथा क्यूबा सहित कई अन्य देशों का भ्रमण भी किया है।

संस्थान के स्थापना दिवस पर हीरक जयंती समारोह

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान की स्थापना के 60 वर्ष पूरे होने के उपलक्ष्य में दिनांक 16 फरवरी, 2012 को हीरक जयंती समारोह आयोजित किया गया। इस अवसर पर संस्थान के निदेशक, डा. सुशील सोलोमन ने संस्थान द्वारा विकसित महत्वपूर्ण उपलब्धियों जैसे उन्नत गन्ना प्रजाति (कोलख 94184), त्रिस्तरीय बीज उत्पादन कार्यक्रम, विभिन्न परिस्थितियों में गन्ना उत्पादन की उन्नत बुवाई विधियाँ, गन्ने में

अन्तः फसली खेती, जैविक विधि द्वारा चोटी बेधक कीट एवं लाल सड़न रोग का प्रबंधन, समेकित पोषक तत्व प्रबंधन, गन्ना बुवाई एवं पेड़ी प्रबंधन यंत्र तथा चुकन्दर खेती के लिए विकसित उन्नत उत्पादन तकनीक का उल्लेख किया एवं योगदान करने वाले वैज्ञानिकों के प्रति आभार व्यक्त किया। भविष्य में शर्करा सम्बन्धी आवश्यकताओं की पूर्ति तथा गन्ने के विभिन्न वैकल्पिक प्रयोगों में बढ़ती माँग की पूर्ति सुनिश्चित करने के उद्देश्य से संस्थान के निदेशक डा. सोलोमन ने भावी शोध कार्यक्रम तैयार करने पर विशेष ध्यान देते हुए सन् 2012 को ''उत्तम वर्ष 2012'' मनाने का आह्वान किया। इस अवसर पर संस्थान के सेवानिवृत्त वैज्ञानिकों को सम्मानित किया गया तथा महत्वपूर्ण विषयों पर विशेषज्ञों द्वारा व्याख्यान भी आयोजित किये गये।

गन्ना उत्पादक राज्यों में संस्थान का योगदान

- उड़ीसा राज्य में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (गन्ना) की सामूहिक बैठक का आयोजन 17 से 19 अक्टूबर, 2011 को उड़ीसा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, भुवनेश्वर में किया गया। क्षेत्र में अधिक शर्करायुक्त तथा अधिक उत्पादन क्षमता वाली नई प्रजातियों के शीघ्र प्रसार के लिए निजी, सार्वजनिक उपक्रम एवं कृषि विश्वविद्यालयों में स्थित ऊतक संवर्धन प्रयोगशालाओं को रोगमुक्त बीज गन्ना उत्पादन के लिए पूरी क्षमता से उपयोग में लाने के लिए बल दिया गया। गन्ना अनुसंधान केन्द्र, नयागढ़ (उ. कृ.प्रौ.वि.) द्वारा विकसित गन्ने की दो नई प्रजातियों, सबिता और नीलमाधाब के जारी होने की जानकारी दी गयी।

  इस बैठक में संस्थान द्वारा तीन अगेती प्रजातियाँ कोलख 11201, कोलख 11202 एवं कोलख 11203 तथा तीन मध्य देरी से पकने वाली प्रजातियाँ कोलख 11204, कोलख 11205 तथा कोलख 22206 को अखिल भारतीय समन्वित गन्ना अनुसंधान परियोजना के उत्तर–पश्चिमी क्षेत्र के अन्तर्गत बहु–स्थानिक परीक्षणों हेतु शामिल किया गया है।
- संस्थान द्वारा विकसित एक अगेती प्रजाति कोलख 07201 तथा तीन मध्य–देरी से पकने वाली प्रजातियों–कोलख 11204, कोलख 11205 तथा कोलख 11206 को उत्तर प्रदेश राज्य प्रजातीय परीक्षणों हेतु सम्मिलित किया गया है।
- गन्ना विभाग, उत्तर प्रदेश सरकार द्वारा विकसित गन्ना सूचना प्रणाली (एसआईएस) पर संस्थान के वैज्ञानिकों की विशेषज्ञ राय जानने हेतु गन्ना आयुक्त, उत्तर प्रदेश सरकार तथा चीनी मिलों के अधिकारियों की बैठक संस्थान परिसर में डा. एस. सोलोमन, निदेशक की अध्यक्षता में हुई। श्री राकेश कुमार पाण्डेय, संयुक्त गन्ना आयुक्त, उत्तर प्रदेश सरकार ने बताया कि गन्ना सूचना प्रणाली चीनी मिलों द्वारा क्रय किये गये गन्ने से संबन्धित क्रियाकलापों की सटीक एवं सामयिक जानकारी गन्ना कृषकों तक पहुँचाने हेतु विकसित की गई है। उन्होंने बताया कि यह प्रणाली प्रदेश की 116 चीनी मिलों में सफलतापूर्वक चल रही है जिसमें गत वर्ष 15 करोड़ एसएमएस तथा 8 लाख आईवीआरएस हिट्स किये गये। उत्तर प्रदेश गन्ना विभाग के श्री अनिल के. शर्मा ने एसआईएस के बारे में बताया कि यह प्रणाली वेबसाइट, आईवीआरएस तथा एसएमएस जैसी कई संचार प्रणालियों का समावेश है। बजाज समूह के श्री सुरेश नैयर ने इस प्रणाली को मैनुअली तरीके की तुलना में त्रुटिहीन तथा पैसे की बचत करने वाली प्रणाली बताया। दौराला शुगर वर्क्स के श्री पी. बी. बकरे, डीएससीएल समूह के श्री कुलदीप सिंह व बजाज हिंदुस्तान समूह के श्री मलिक ने भी विचार–विमर्श किया। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के वैज्ञानिकों ने परियोजना दल के सदस्यों से प्रणाली के विशिष्ट गुण तथा होने वाले लाभ के बारे में विस्तार से चर्चा की तथा इस प्रणाली का किसानों के स्तर पर होने वाले प्रभाव के मूल्यांकन की आवश्यकता व्यक्त की। गन्ना आयुक्त उ.प्र. के अनुरोध पर संस्थान ने इस प्रणाली का मूल्यांकन किया एवं इस संबंध में एक प्रकाशन भी जारी किया।

- उत्तराखण्ड राज्य में चुकन्दर की खेती को लोकप्रिय करने हेतु डा. ए.डी. पाठक, अध्यक्ष, फसल सुधार विभाग ने इसकी विस्तृत *प्रोजेक्ट रिपोर्ट* बनाने के उद्देश्य से राज्य के शीर्ष अधिकारियों की बैठक में भाग लिया। बैठक में उत्तराखण्ड राज्य के लिए एक पाइलट परियोजना अनुमोदित की गई है। इसके अन्तर्गत भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ चुकन्दर की खेती हेतु आवश्यक तकनीकी जानकारी उपलब्ध कराएगा।
- संस्थान के वैज्ञानिकों की एक टीम ने उत्तराखण्ड की आठ चीनी मिल क्षेत्रें का दौरा करके गन्ने में फूल आने तथा रोग एवं कीट की समस्या का सर्वेक्षण किया एवं उनके निदान हेतु 10–14 अक्तूबर, 2011 के मध्य विभिन्न चीनी मिलों मे वार्ताएं आयोजित की।
- बिहार राज्य में विभिन्न जनपदों की 'आत्मा' एजेन्सियों के सक्रिय योगदान से संस्थान में गन्ना उत्पादन की उन्नत कृषि तकनीक विषय पर किसानों के लिए अल्पावधि (पाँच एवं दस दिवसीय) के तीन प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। जिसके अन्तर्गत गोपालगंज, बेगूसराय तथा मुजफ्फरपुर जनपदों के कुल 59 कृषक लाभान्वित हुए।

- मध्य प्रदेश में ग्वालियर स्थित डाबरा चीनी मिल क्षेत्र का संस्थान के वैज्ञानिकों द्वारा भ्रमण कर गन्ना उत्पादकता बढ़ाने के लिए आवश्यक परामर्शी सेवाएं प्रदान की गईं।
- तमिलनाडु राज्य में अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (गन्ना) के सभी क्षेत्रों के प्रजनकों की बैठक 24 जनवरी, 2012 को गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर में आयोजित की गई। इस बैठक में परियोजना के सभी केन्द्रों के अभिजनकों एवं पादप रोग विशेषज्ञों ने भाग लिया।

शोध विशिष्टताएँ

गन्ना प्रौद्योगिकी की सफल कहानी

संस्थान द्वारा विकसित उन्नत प्रौद्योगिकी पर प्रशिक्षण प्राप्त करने के उपरान्त बिहार राज्य में गोपालगंज जनपद के सिद्धौलिया गाँव निवासी श्री राजेश कुमार ने गन्ना बुआई की गोलगड्डा विधि अपना कर परम्परागत खेती से 50–60 टन प्रति हे. की तुलना में 175 टन प्रति हे. की गन्ना उपज प्राप्त की। स्थानीय विरला समूह की चीनी मिल ने श्री राजेश कुमार की इस उद्यमता को समझते हुए उन्हें ईनाम के तौर पर एक 'डिस्क हेरो' प्रदान किया तथा एक प्रशस्ति पत्र भी प्रदान किया।

संस्थान द्वारा विकसित आर. बी. एस. (RBS) मशीन के प्रर्दशन से प्रभावित होकर श्री राजेश कुमार ने गन्ना फसल के साथ गेहूँ तथा मसूर की सहफसली खेती भी अपनायी है। श्री राजेश कुमार के अनुसार सहफसली खेती से प्राप्त अतिरिक्त आय से उन्होंने अपने कृषि फार्म पर दुग्ध उत्पादन तथा मछली उत्पादन व्यवसाय भी शुरू किया है। अतः संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकी से किसानो के खेतो में प्रतिहेक्टयर 4 लाख रूपये से अधिक की आय सृजन करने की अपार सम्भावनाए पैदा हुई हैं।

गन्ना बीज शीघ्र बहुगुणन हेतु बड् चिप विधि

सामान्यतया गन्ने की बुवाई के लिए लगभग 6 टन प्रति हेक्टेयर गन्ना बीज की आवश्यकता होती है। इस विधि की अपेक्षा बड् चिप तकनीक के प्रयोग द्वारा गन्ना बीज की मात्रा को 10 प्रतिशत तक घटाया जा सकता है। *बड् चिप नर्सरी* को प्लास्टिक कप में लगाकर आवागमन करने से बीज गन्ना की कम मात्र की आवश्यकता होती है। इस विधि से बीज गुणांक 1 : 60 पाया गया है। इस विधि से 80–90 प्रतिशत तक गन्ना बीज का उपभोग बचाया जा सकता है। बड् चिप का अंकुरण लगभग 80 प्रतिशत तक होता है। बड् चिप से उत्पन्न फसल की उपज 120 टन/हेक्टेयर ऑकी गयी है। इसमें गन्ना अधिक लम्बा व पेरने योग्य गन्नों की संख्या बढ़ जाती हैं। *बड् स्कूपिंग मशीन* द्वारा *बड् चिप्स* को निकालकर 0.1 प्रतिशत बैविस्टिन एवं पौध वृद्धि रसायन घोल में भिगोकर प्लास्टिक ट्रे/कप या मिनी प्लांट में पौध को बो देते हैं। 30 दिन पश्चात इस पौध को पूर्व में तैयार खेत में प्रत्यारोपित कर दिया जाता है। शुरू में पौध की देखभाल पर विशेष ध्यान रखने की आवश्यकता होती है। संस्थान ने यह विधि अपनाने के लिए उद्यमी युवाओं के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम भी विकसित किया है।

पोस्ट डाक्टरेट प्रशिक्षण

अफ्रीका–एशिया क्षेत्रों में गन्ना शोध एवं विकास को बढ़ावा देने के लिए ईराक के दियाला विश्वविद्यालय के वैज्ञानिक डा. नादिर एफ. ए. अलमुबारक, विभागाध्यक्ष, सस्य फसल विभाग को संस्थान द्वारा एक वर्ष का पोस्ट डाक्टरेट प्रशिक्षण प्रदान किया जा रहा है।

संगोष्ठी/कार्यशाला/समीक्षा बैठकों का आयोजन

अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी

विकासशील देशों में **''चीनी, ऊर्जा उत्पादन में संतुलन : टिकाऊ तकनीक एवं विपणन रणनीति''** विषय पर चौथी अन्तर्राष्ट्रीय संगोष्ठी एवं *एक्सपो आई.एस.–2011* का आयोजन आई.ए.पी.एस.आई.टी. तथा एस.टी.ए.आई., नयी दिल्ली के संयुक्त तत्वाधान में नयी दिल्ली में 21–25 नवम्बर, 2011 को सम्पन्न हुआ। संगोष्ठी में 32 देशों के 600 से अधिक विशिष्ट प्रतिभागियों ने भाग लिया। संगोष्ठी का उद्घाटन श्री शरद पवार, केन्द्रीय कृषि एवं खाद्य प्रसंस्करण उद्योग मंत्री, भारत सरकार द्वारा किया गया। उन्होंने शोधविदों, योजनाकारों तथा प्रशासकों से देश के विभिन्न भागों में गन्ने की मे अन्तर कम करने तथा चीनी परता में सुधार के लिए अपील की तथा चीनी की माँग को पूरा करने के लिए चीनी व गन्ना की उत्पादकता में वृद्धि करने पर बल दिया। डा. फारूख अब्दुल्ला, केन्द्रीय नवीन और नवीकरणीय ऊर्जा मंत्री, भारत सरकार ने पेट्रोल के आयात में कमी के प्रयास में जैव–ईंधन, सह–उत्पादन, जैव–ईंधन मिश्रण तथा इनकी कीमतें निर्धारित करने के महत्व का उल्लेख किया। डा. एस. सोलोमन, सचिव, आई.ए.पी.एस.आई.टी. ने अपने स्वागत उद्बोधन में वर्तमान परिदृश्य में संगोष्ठी आयोजन के महत्व तथा चीनी के अतिरिक्त जैव–ईंधन के लिए गन्ना के महत्व को रेखांकित किया। डा. जी.एस.सी. राव, अध्यक्ष, एस.टी.ए.आई. ने भारतीय चीनी उद्योग के समक्ष प्रस्तुत चुनौतियों एवं ज्वलंत समस्याओं की ओर ध्यान आकर्षित किया। शोधविदों द्वारा विषयगत क्षेत्रें में विचार–विमर्श के उपरान्त जारी की गई संगोष्ठी की मुख्य संस्तुतियाँ इस प्रकार हैं–

- गन्ना के वैकल्पिक उपयोग एवं महत्व को नये आयाम देने के लिए गन्ना उत्पादों के प्रसंस्करण हेतु नये अवसरों का सृजन
- चीनी मिलों द्वारा गन्ना विकास के लिए ठोस कदम उठाने की महती आवश्यकता
- गन्ना उत्पादक देशों के लघु एवं सीमान्त गन्ना कृषकों का स्तर सुधारने हेतु अधिक प्रयास की आवश्यकता
- जलवायु परिवर्तन के कुप्रभाव के विरूद्ध रक्षात्मक रणनीति को तैयार करना
- ब्राजील के अनुभव पर आधारित, चीनी मिलों द्वारा प्रबन्धित गन्ने की बुवाई तथा परिपक्वता के आधार पर कटाई एवं पेड़ी प्रबंधन को प्राथमिकता देना
- गन्ना सम्बद्ध उद्योग की उत्पादकता को बढ़ाने हेतु उच्चीकरण करना क्योंकि यह खाद्य, ईंधन व रेशा आपूर्ति के लिए अन्य उद्योगों की प्रतिस्पर्धा में शामिल रहेगी।
- समय की माँग के अनुरूप जननद्रव्य उपयोग, संकरण तथा चयन की कार्यकुशलता में सुधार हेतु आणविक जैवप्रौद्योगिकविदों को परम्परागत गन्ना प्रजनकों के साथ मिलकर कार्य करना चाहिए।
- उपयोगी प्रजातियों के चयन हेतु गन्ने के जीन प्रारूपों का विभिन्न स्थानों पर परीक्षण करना चाहिए।

- गन्ने के जटिल जीनोम के लक्षण–वर्णन तथा उच्च शर्करायुक्त, ऊर्जा उत्पादन क्षमता, सूखे अथवा शीत सहनशीलता तथा कीट अवरोधिता जैसे आर्थिक महत्व के लक्षणों से जुड़े उपयोगी डी.एन.ए. संसूचकों के विकास के लिए विभिन्न संस्थानों में आपसी सहयोग को बढ़ावा देना चाहिए।
- *एस.एस.आर. फिंगरप्रिंटिंग* तथा गन्ना प्रजनन में इनके उपयोग हेतु समय–समय पर प्रशिक्षण कार्यक्रम/कार्यशालायें आयोजित की जानी चाहिए।

अखिल भारतीय समन्वित अनुसंधान परियोजना (गन्ना) की सामूहिक बैठक

- अखिल भारतीय समन्वित गन्ना अनुसंधान परियोजना (ऐक्रिप) की सामूहिक बैठक का आयोजन उड़ीसा कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय (उ.कृ.प्रौ.वि.), भुवनेश्वर में अक्टूबर 17 से 19, 2011 को किया गया। इस बैठक में ऐक्रिप (गन्ना) के शोध केन्द्रों के वैज्ञानिक, राज्य कृषि विभाग के अधिकारी एवं चीनी उद्योग से शोध/विकासकर्मियों के लगभग 150 लोगों ने सहभागिता दी। डा. ओ.के. सिन्हा, परियोजना समन्वयक (गन्ना) ने बैठक में उ.कृ.प्रौ. वि. तथा उड़ीसा राज्य कृषि विभाग के सामूहिक प्रयास से त्रिस्तरीय बीज उत्पादन प्रणाली द्वारा गुणवत्तापूर्ण बीज गन्ना उत्पादन एवं वितरण पर बल दिया। क्षेत्र में अधिक शर्करायुक्त तथा अधिक उत्पादन वाली नई प्रजातियों के शीघ्र प्रसार के लिए सरकारी एवं गैर–सरकारी उपक्रमों तथा कृषि विश्वविद्यालयों में स्थित ऊतक संवर्धन प्रयोगशालाओं को रोगमुक्त बीज गन्ना उत्पादन के लिए उपयोग में लाने का सुझाव दिया।

गन्ना प्रजनक बैठक

- एक्रिप (गन्ना) के सभी क्षेत्रें के प्रजनकों की बैठक गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर में 24 जनवरी, 2012 को आयोजित की गई। इस बैठक में परियोजना के सभी केन्द्रों के पादप प्रजनक एवं पादप रोग विशेषज्ञों ने भाग लिया। डा. एन. विजयन नायर, निदेशक, गन्ना प्रजनन संस्थान एवं मुख्य अन्वेषक (फसल सुधार) ने बैठक की अध्यक्षीय टिप्पणी में पोल प्रतिशत गन्ना, जो कि चीनी परता को दर्शाता है, के आंकलन पर बल दिया और प्रजनकों को, इसके मापन को वार्षिक रिपोर्ट में अंकित करने को कहा। तकनीकी सत्र में लाल सड़न की प्रतिरोधिता, शर्करा प्रतिशत रस एवं खेतों में खड़ी फसल की अवस्था के आधार पर *आई.वी.टी.* प्रविष्टियों को *ए.वी.टी.* में प्रोन्नत करने पर चर्चा हुई।

शोध संस्थान–चीनी उद्योग इंटरफेस बैठक

शोध प्राथमिकताओं तथा प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण में संभावित सुधारों के उद्देश्य से संस्थान–चीनी उद्योग की इंटरफेस बैठक 20 जनवरी, 2012 को निदेशक, भा.ग.अनु.सं. की अध्यक्षता में आयोजित की गयी। इस अवसर पर *शुगर टैक्नोलौजिस्ट्स एसोसिएशन ऑफ इंडिया* के अध्यक्ष एवं सी.ई.ओ., सिम्भौली शुगर, डा.जी.एस.सी. राव तथा उत्तर प्रदेश चीनी मिल संघ के अध्यक्ष, श्री दीपक गुप्तारा ने चीनी उद्योग की चुनौतियों एवं संस्थान से निदान संबंधी अपेक्षाओं पर अपना दृष्टिकोण रखा। संस्थान द्वारा विकसित तथा व्यावसायिक उपयोग के लिए उपलब्ध तकनीक पर प्रस्तुतीकरण देते हुए डा. ए.के. शर्मा, प्रभारी, पी.एम.ई. ने चीनी उद्योग के लिए उपयोगी प्रौद्योगिकी से अवगत किया। बैठक में सभी वैज्ञानिकों ने सक्रिय सहभागिता दी। बैठक में कृषकों व चीनी उद्योग से परम्परागत गन्ना प्रबंधन प्रणाली को बदलने पर जोर दिया गया तथा संस्थान से चीनी उद्योग के लिए, गन्ने की खेती का यंत्रेकरण, गन्ने की गेहूँ की फसल के साथ अन्तःसस्य, भारतीय चीनी मिल संघ के साथ प्रजातीय मूल्यांकन परीक्षण, बेधकों के रासायनिक व जैविक नियंत्रण, रोग निगरानी के लिए फसल निरीक्षण कार्यक्रम, बीज की शुद्धता का विश्लेषण करने हेतु बीज प्रमाणीकरण तंत्र, नत्रजन उर्वरकों की माँग को घटाने हेतु गन्ना द्वारा नत्रजन स्थिरीकरण, प्रशिक्षण तथा शिक्षण कार्यक्रम, *सेल्यूलोजिक डीग्रेडेशन* तथा इथनॉल उत्पादन पर सहयोगपूर्ण अनुसंधान की आवश्यकता आदि अपेक्षाओं की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया।

इसी क्रम में पश्चिमी उत्तर प्रदेश की मवाना चीनी मिल प्रबन्धकों के साथ एक अन्य *'स्टेकहोल्डर बैठक'* का आयोजन किया गया तथा चीनी उद्योग की अपेक्षाओं की ओर ध्यान आकृष्ट किया गया।

संस्थान शोध परिषद की बैठक

संस्थान शोध परिषद की बैठक डा. एस. सोलोमन, निदेशक की अध्यक्षता में 8–9 फरवरी, 2012 को आयोजित की गयी जिसमें संस्थान के सभी वैज्ञानिकों ने भाग लिया। बैठक में विभागाध्यक्षों ने विभाग की शोध परियोजनाओं के बारे में बताया। इस बैठक में विभिन्न विभागों के वैज्ञानिकों द्वारा प्रस्तुत शोध परियोजनाएं संस्तुत की गयीं तथा कुल 20 नवीन शोध परियोजनाएं अनुमोदित की गयीं।

संस्थान तकनीकी प्रबन्धन समिति की बैठक

संस्थान तकनीकी प्रबन्धन समिति की बैठक संस्थान के निदेशक, डा. एस. सोलोमन की अध्यक्षता में 6 फरवरी, 2012 को आयोजित की गयी जिसमें संस्थान द्वारा विकसित प्रौद्योगिकियों के अधिकार संरक्षण के पहलुओं पर व्यापक विचार विमर्श किया गया तथा तीन प्रौद्योगिकियों को पेटेन्ट हेतु इंगित किया गया। इसके अतिरिक्त, 6 माह की अवधि का एक नया प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करने का निर्णय लिया गया।

पंचवर्षीय समीक्षा बैठक

- डा. आर.पी. कचरु, पूर्व सहायक महानिदेशक (प्रसंस्करण अभियांत्रिकी) की अध्यक्षता में पश्च–कटाई तकनीक की पंचवर्षीय समीक्षा दल ने 22–23 दिसम्बर 2011 को संस्थान का भ्रमण किया। इस बैठक में विभिन्न शोध केन्द्रों जैसे भा.ग.अनु. सं., लखनऊ; न. दे. कृ. एवं प्रौ. वि., फैजाबाद; बि.कृ.वि., राँची तथा अ.मु.वि., अलीगढ़ में गत पाँच वर्षों में किए गऐ शोध कार्यों की समीक्षा की गई।
- डा. ए.जी. पवार, अधिष्ठाता एवं निदेशक (शोध), डा. बाला साहेब सावंत कोकण कृषि विद्यापीठ, दपोली की अध्यक्षता में एफ.आई. एम. के पंचवर्षीय समीक्षा दल ने 26–29 दिसम्बर 2011 को संस्थान का भ्रमण करके विभिन्न शोध केन्द्रों जैसे भा.ग.अनु.सं., लखनऊ; न.दे.कृ. एवं प्रौ.वि., फैजाबाद; ज.ने.कृ.वि.वि., जबलपुर एवं सै.हि. कृ.त.वि.सं., इलाहाबाद में गत पाँच वर्षों में किए गऐ शोध कार्यों की समीक्षा की गई।

संस्थान के अन्य आयोजन

नेशनल शुगर फेस्ट 2012 का आयोजन

संस्थान के शोध कार्यों तथा परिलब्धियों के व्यापक प्रचार–प्रसार तथा विद्यार्थियों में वैज्ञानिक सोच जागृत करने के उद्देश्य से संस्थान प्रांगण में 23 एवं 24 मार्च, 2012 को नेशनल शुगर फेस्ट 2012 आयोजित किया गया। इस कार्यक्रम में लखनऊ एवं आसपास के जनपदों के विद्यालयों, महाविद्यालयों एवं विश्वविद्यालयों के छात्र एवं शिक्षक, उत्तर प्रदेश, बिहार, उत्तराखण्ड एवं मध्य प्रदेश के किसान एवं गन्ना तथा चीनी से जुड़े उद्योगों, विभागों एवं संस्थाओं से सम्बद्ध लगभग 5000 लोगों ने संस्थान भ्रमण कर वैज्ञानिक कार्यक्रम व गतिविधियों की विविध जानकारी प्राप्त की। कार्यक्रमों के माध्यम से समाज में गन्ने के महत्व को समझाने का सार्थक प्रयास किया गया। इस अवसर पर कृषि विज्ञान केन्द्र, लखनऊ के सहयोग से किसान मेले का भी आयोजन किया गया जिसमें कृषकों की समस्याओं के निदान हेतु वैज्ञानिक उपाय सुझाए गये।

पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण अधिनियम, 2001 हेतु जागरूकता कार्यक्रम

संस्थान द्वारा पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण अधिनियम, 2001 हेतु जागरूकता कार्यक्रम 23 एवं 24 मार्च, 2012 को आयोजित किये गये। इन कार्यक्रमों में लगभग 700 कृषकों एवं 100 अधिकारियों तथा कर्मचारियों को इस अधिनियम के विभिन्न प्रावधानों के बारे में जानकारी दी गई। संस्थान के निदेशक, डा. एस. सोलोमन की अध्यक्षता में कार्यक्रम का उद्घाटन गन्ना आयुक्त, उ.प्र., श्री कामरान रिजवी द्वारा किया गया। डा. तेजबीर सिंह, पंजीकार, पौधा किस्म और कृषक अधिकार संरक्षण प्राधिकरण, नई दिल्ली ने अधिनियम के अन्तर्गत किसानों को लाभदायक प्रावधानों से अवगत कराया।

राष्ट्रीय विज्ञान दिवस का आयोजन

संस्थान में 28 फरवरी, 2012 को राष्ट्रीय विज्ञान दिवस के रूप में मनाया गया। जिसमें लखनऊ स्थित विश्वविद्यालयों/ महाविद्यालयों के 150 से अधिक स्नातक/परास्नातक छात्रों ने भाग लिया। कार्यक्रम के सूत्रधार डा. एस. सोलोमन, निदेशक ने राष्ट्रीय विज्ञान दिवस की थीम *''क्लीन एनर्जी आप्शन एंड न्यूक्लियर एनर्जी''* पर उद्बोधन भाषण दिया तथा ऊर्जा के स्वच्छ श्रोत के रूप में गन्ने के महत्व का उल्लेख किया। उन्होंने संस्थान द्वारा कृषि विज्ञान एवं जैव प्रौद्योगिकी विषयों पर स्नातक एवं स्नात्कोत्तर छात्रों के लिए 45, 90 व 180 दिवसीय प्रशिक्षण कार्यक्रमों के बारे में जानकारी दी। इस अवसर पर डा. अमरेश चन्द्रा, विभागाध्यक्ष,

पादप दैहिकी एवं जैव रसायन व डा. राधा जैन, वरिष्ठ वैज्ञानिक ने भी व्याख्यान दिए। डा. ए. के. शर्मा, प्रधान वैज्ञानिक एवं प्रभारी, शोध समन्वय प्रबन्धन ने प्रशिक्षण कार्यक्रमों हेतु निर्धारित विषयों तथा संस्थान में उपलब्ध सुविधाओं व वैज्ञानिक उपकरणों के बारे में प्रस्तुतीकरण दिया।

संस्थान की नई वेबसाइट का शुभारम्भ

संस्थान के ए.के.एम.यू. अनुभाग ने संस्थान की नई वेबसाइट को विकसित किया। इसको विकसित करने में परिषद से प्राप्त वेबसाइट समरूपता के सुझावों को ध्यान में रखा गया है। वेबसाइट का उद्घाटन दिनाँक 21 मार्च, 2012 को डा. बी.एस. बिष्ट, कुलपति, गोविन्द बल्लभ

पन्त कृषि एवं प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, पंतनगर द्वारा सम्पन्न हुआ। इस अवसर पर डा. बिष्ट ने वेबसाइट में प्रमुख सूचनाओं का अवलोकन किया तथा उनकी सराहना की। नई वेबसाइट का अवलोकन www.iisr.nic.in पर किया जा सकता है।

संस्थान परिसर में स्टेट बैंक की नई शाखा का उद्घाटन

डा. एस. सोलोमन, निदेशक ने भा.ग.अनु.सं., लखनऊ प्रांगण में भारतीय स्टेट बैंक की नई शाखा का उद्घाटन 200 से अधिक बैंक ग्राहकों की उपस्थिति में किया। इस अवसर पर श्री जीवन सहाय, उपमहाप्रबंधक, एस.बी.आई. तथा श्री अवेश हजेला, क्षेत्रीय प्रबंधक, एस.बी.आई. तथा श्री ए.के. श्रीवास्तव, शाखा प्रबंधक उपस्थित थे। इसके अतिरिक्त, संस्थान प्रांगण में एक ए.टी.एम. भी स्थापित किया गया है। इससे संस्थान के अधिकारियों व कर्मचारियों को लाभ मिलेगा।

प्रतीक चिन्ह (लोगो) प्रतियोगिता

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के लिए सर्वोत्तम प्रतीक चिन्ह की पहचान के लिए संस्थान में एक प्रतियोगिता का आयोजन दिनांक 10 अक्टूबर, 2011 को किया गया। इस प्रतियोगिता के प्रथम तीन विजयी प्रतिभागियों—कु. सौम्या सिंह, श्री चमन सिंह, टी—5 तथा श्री मो. अशफ़ाक खान, शोध सहयोगी को संस्थान के निदेशक, डा. एस. सोलोमन ने गणतंत्र दिवस समारोह के शुभ अवसर पर पुरस्कृत किया। प्रथम कृति को संस्थान के प्रतीक चिन्ह (लोगो) विकसित करने हेतु चयनित किया गया।

प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण

संस्थान प्रौद्योगिकी विस्तार पटल सर्वश्रेष्ठ घोषित

भारतीय कृषि अनुसंधान संस्थान, नई दिल्ली परिसर में 1—3 मार्च, 2012 तक तीन दिवसीय अखिल भारतीय पूसा कृषि विज्ञान मेले में संस्थानों/केन्द्रों/सेवायोजकों के 240 सेवा विस्तार पटल प्रदर्शित किये गये। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के प्रौद्योगिकी विस्तार पटल का प्रदर्शन एवं प्रस्तुतीकरण सर्वश्रेष्ठ घोषित किया गया। इस अवसर पर संस्थान को एक प्रशस्ति पत्र व प्रतीक चिन्ह, श्री सोमपाल शास्त्री, माननीय पूर्व केंद्रीय कृषि राज्यमंत्री, भारत सरकार द्वारा प्रदान किया गया। संस्थान के स्टाल को माननीय श्री चरण दास महन्त, केन्द्रीय कृषि राज्यमंत्री; श्री हरीश रावत, केन्द्रीय संसदीय कार्य राज्यमंत्री, डा. एस. के. दत्ता, उपमहानिदेशक (फसल विज्ञान); डा. एच.पी. सिंह, उपमहानिदेशक (बागवानी); डा. के. डी. कोकाटे, उपमहानिदेशक (कृषि प्रसार), भा. कृ. अनु. प., नई दिल्ली; डा. आर. बी. सिंह, डा. एच. एस. गुप्ता, निदेशक, भा. कृ. अनु. सं., नई दिल्ली के अतिरिक्त, अनेक उच्च अधिकारियों ने भ्रमण किया और संस्थान द्वारा विकसित गन्ना कृषि तकनीकियों पर व्यापक चर्चा की। देश के विभिन्न भागों से आये वैज्ञानिकों, गन्ना कृषि विकास कार्यकर्ताओं, चीनी मिल प्रबन्धकों व गन्ना कृषकों आदि ने इस स्टाल में व्यापक रूचि दिखाई।

कृषि विज्ञान केन्द्र, लखनऊ के सहयोग से प्रौद्योगिकी हस्तान्तरण

संस्थान स्थित कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा पशुपालन, औद्यानिकी, गृह विज्ञान एवं कीट विज्ञान आधारित विषयों पर 38 प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। जिसमें विभिन्न वर्गों के कुल 827 प्रशिक्षणार्थियों ने प्रशिक्षण प्राप्त किया। दिनांक 12 दिसम्बर से 20 दिसम्बर, 2011 तक राज्य औद्यानिक मिशन योजना के अन्तर्गत 200 कृषकों के लिए प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित किये गये। जिसमें आलू बीज उत्पादन, फलों एवं फूलों की खेती, मसालों की खेती आदि विषयों पर प्रशिक्षण प्रदान किया गया। कृषि दर्शन कार्यक्रम के अन्तर्गत, उद्यान एवं पशुपालन विषयों पर 07 दूरदर्शन वार्ताएं प्रस्तुत की गईं। कृषि विज्ञान केन्द्र द्वारा दिनांक 23 एवं 24 मार्च, 2012 को एक किसान मेले का आयोजन किया गया जिसमे 25 कृषि तकनीक प्रदर्शनी स्टाल लगाये गये एव लखनऊ व अन्य जनपदों के 750 कृषकों ने भाग लिया।

स्टाफ न्यूज़

सम्मान/पुरस्कार

- डा. अमरेश चन्द्रा, विभागाध्यक्ष, पादप दैहिकी एवं जीव रसायन को 'जैव प्रौद्योगिकी विभाग', विज्ञान एवं प्रौद्योगिकी मंत्रलय, भारत सरकार द्वारा डी.बी.टी. क्रैस्ट 2011–12 फेलोशिप एवार्ड (ओवरसीज एसोशिएटशिप) से पुरस्कृत किया गया।
- डा. संगीता श्रीवास्तव, प्रधान वैज्ञानिक को वर्ष 2011–12 के लिए डी. बी.टी. क्रैस्ट पुरस्कार (कटिंग एज रिसर्च एन्हान्समेन्ट एंड सांइटिफिक ट्रेनिंग एवार्डस) हेतु चयनित किया गया।
- डा. पी.के. सिंह को पादप जीनोम संरक्षक समुदाय पुरस्कार, भारत सरकार, के निर्णायक मंडल का सदस्य; डा. संगीता श्रीवास्तव को ''इण्डियन जर्नल ऑफ फन्डामैन्टल एण्ड एप्लाइड लाइफ सांइसेज'' नामक पत्रिका के सम्पादक मण्डल के सदस्य एवं श्री ब्रह्म प्रकाश को भारतीय कृषि विपणन समिति की कार्यकारी समिति का सदस्य नामित किया गया।

मानव संसाधन विकास

- स्नातकोत्तर स्तर पर गन्ना शोध को बढ़ावा देने एवं शैक्षणिक संस्थानों के साथ आपसी तालमेल को सुदृढ़ करने की दिशा में संस्थान द्वारा प्रभावी कदम उठाये गये। इस क्रम के प्रथम चरण में चन्द्रशेखर आजाद कृषि एवं प्रौ.वि.वि., कानपुर, अमिटी वि.वि., लखनऊ तथा सैम हिग्गिनबाटम कृषि प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय), इलाहाबाद के साथ, पीएचडी छात्रों के लिए शोध सहायता सम्बन्धी संयुक्त सहमति ज्ञापन हस्ताक्षरित किये गये।
- विभिन्न सम्मेलनों एवं कार्यक्रमों में 18 वैज्ञानिकों एवं तकनीकी अधिकारियों ने भाग लिया।
- श्री राजेन्द्र गुप्ता, वरिष्ठ वैज्ञानिक को सिविल अभियंत्रण विषय पर गौतम बुद्ध प्रौद्योगिकी विश्वविद्यालय, लखनऊ एवं श्री सैय्यद सरफराज़ हसन, वरिष्ठ वैज्ञानिक, को 'कम्प्यूटर साइंस कम्युनिकेशन' विषय पर सैम हिग्गिनबाटम कृषि प्रौद्योगिकी एवं विज्ञान संस्थान (मान्य विश्वविद्यालय), इलाहाबाद द्वारा पीएचडी की उपाधि प्रदान की गयी।

नियुक्तियाँ

नाम व पदनाम	दिनाँक
डा. निथ्या के., वैज्ञानिक	23.12.2011
सुश्री वी. विशा कुमारी, वैज्ञानिक	23.12.2011

पदोन्नति

नाम व पद	पदोन्नति	प्रभावी तिथि
श्री राम दास, सहायक	स. प्रशा. अधिकारी	04.10.2011
श्री डी.एन. सिन्हा, टी–4	टी–5	03.02.2010
श्री योगेन्द्र राय, टी–1	टी–2	05.07.2008
श्रीमती मीना निगम. टी–5	टी–6	01.01.2012
श्री सी.पी. प्रजापति, टी–4	टी–5	05.09.2011

- प्रशासनिक वर्ग के सात (7) कर्मचारियों को एम.ए.सी.पी. प्रावधान के अन्तर्गत वित्तीय उच्चीकरण प्रदान किया गया

सेवानिवृत्त

नाम व पद	सेवानिवृत्ति की तिथि
डा. आर.एल. यादव, निदेशक	30.11.2011
श्री निरजंन लाल, टी–5	30.11.2011
श्री जे.एस. बिष्ट, टी–5	31.12.2011
डा. आर.एस. वर्मा, प्रधान वैज्ञानिक	31.01.2012
डा. जी.एम. त्रिपाठी, प्रधान वैज्ञानिक	31.01.2012
श्री हरिश्चन्द, एस.एस.एस.	29.02.2012
डॉ. (कु.) वन्दना गुप्ता	31.03.2012

आगामी आयोजन

1. श्रीलंका देश से केन्द्रीय मंत्री रेगिनोल्ड कुरे की अध्यक्षता में एक दल का भ्रमण कार्यक्रम : जून 3–6, 2012
2. संस्थान की शोध सलाहकार समिति की बैठक: 28 जून, 2012
3. गन्ना प्रबंधन एवं विकास पर राष्ट्रीय : 1–21, जुलाई, 2012; अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण: 15 अक्टूबर से 4 नवम्बर, 2012
5. कृषि उद्योग दिवस: 16 अक्टूबर, 2012
6. भा.कृ.अनु.प. – राज्य कृषि विश्वविद्यालय – राज्य कृषि विभाग इण्टरफेस बैठक: 16–17 नवम्बर, 2012
7. कृषि शिक्षा दिवस: 17 नवम्बर, 2012
8. कृषि नवोन्मेषक दिवस: 23 दिसम्बर, 2012

प्रशिक्षण एवं परामर्शी सेवाएँ

गन्ना उत्पादन प्रबन्धन में अन्तर्राष्ट्रीय प्रशिक्षण

आयोजक : भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ (भारत)
सहयोग : ए.एस.टी.आई., आई.ए.पी.एस.आई.टी., एस.एस.आर.पी. तथा एस.टी.ए.आई.
अवधि : 21 दिन (15 अक्टूबर से 4 नवम्बर, 2012)
नामांकन की अन्तिम तिथि–31 जुलाई, 2012
प्रशिक्षण शुल्क –2500 अमेरिकन डॉलर (₹ 1.25 लाख)
शुल्क में पंजीकरण, आवास, भोजन तथा स्थानीय यात्रा खर्च शामिल हैं।

मुख्य आकर्षण

- गन्ना उत्पादन प्रौद्योगिकी में मूलभूत तथा नवीनतम उपलब्धियों पर व्याख्यान
- प्रयोगशाला तकनीकों एवं प्रक्षेत्रीय विधाओं पर प्रायोगिक प्रशिक्षण का प्रावधान
- आधुनिक शर्करा प्रसंस्करण इकाइयों का शैक्षिक भ्रमण
- राष्ट्रीय शर्करा संस्थान, कानपुर/उ. प्र. गन्ना शोध परिषद, शाहजँहापुर /गन्ना प्रजनन संस्थान, कोयम्बटूर तथा ताजनगरी, आगरा का शैक्षिक भ्रमण।

सम्पर्क सूत्र :– निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान सस्थान, लखनऊ (भारत)
ईमेल:– directoriisrlko@gmail.com, iisrlko@sancharnet.in

गन्ना प्रबन्धन एवं विकास पर राष्ट्रीय प्रशिक्षण

(जुलाई 1–21, 2012)

गन्ना कृषि एवं विकास में नवीनतम प्रौद्योगिकी के बारे में गन्ना–मिलों के गन्ना विकास कर्मियों को प्रशिक्षण देने के उद्देश्य से भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान 1–21 जुलाई, 2012 के मध्य 21 दिवसीय राष्ट्रीय प्रशिक्षण कार्यक्रम आयोजित करेगा।

प्रशिक्षण शुल्क : ₹ 10,000 प्रति प्रशिक्षणार्थी

आवासीय व भोजन शुल्क: ₹ 350 (सामान्य) व ₹ 450 (वातानुकूलित) प्रति दिन प्रति प्रशिक्षणार्थी। एक कमरे का आंवटन दो प्रशिक्षुओं को किया जाएगा।

नामांकन हेतु अंतिम तिथि: 10 जून, 2012

चयन का आधार: एक चीनी मिल से एक या दो, को प्रथम आओ–प्रथम पाओ के आधार पर

सम्पर्क सूत्र :– निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान सस्थान, लखनऊ (भारत)
ईमेल:– directoriisrlko@gmail.com; ajay_kumar29@rediffmail.com

चीनी उद्योग के लिए परामर्शी सेवाएं

कृषकों तथा चीनी उद्योग के लिए उपयोगी गन्ना तकनीक एवं चीनी परता में वृद्धि हेतु भा.ग.अनु.सं. में निम्नलिखित क्षेत्रों में परामर्शी सेवाएं उपलब्ध हैं :

- चीनी मिलों में उन्नत गन्ना विकास
- गन्ना कृषि का यंत्रीकरण
- समेकित गन्ना पेड़ी प्रबन्धन
- गन्ने के साथ अन्तःसस्य खेती
- गन्ने एवं चुकन्दर में कीटों एवं रोगों का समेकित प्रबन्धन
- मिल क्षेत्र में वैज्ञानिक प्रजातीय योजना
- खरपतवार प्रबन्धन
- गन्ने में जल प्रबन्धन (सूक्ष्म सिंचाई, सिंचाई के साथ उर्वरक देना व नमी संरक्षण)
- सामान्य एवं उष्णकटिबन्धीय परिस्थितियों में चुकन्दर उत्पादन प्रौद्योगिकी
- बीज उपचार इकाई तथा स्वस्थ बीज उत्पादन प्रौद्योगिकी
- ऊतक सवर्द्धन प्रयोगशाला की स्थापना/पौधों को उगाने हेतु ऊतक सवर्द्धन तकनीक
- जैव-नियंत्रण प्रयोगशालाओं की स्थापना
- गन्ना गुणवत्ता प्रयोगशाला (जूस व शर्करा विश्लेषण हेतु) की स्थापना
- गुड़ उत्पादन, मूल्य संवर्द्धन, रख-रखाव तथा भण्डारण
- खेतों तथा मिलों में शर्करा क्षति रोकने हेतु पश्च-कटाई प्रबन्धन तथा जैवनाशी रसायनों का संतुलित प्रयोग
- गन्ना में सुक्रोज स्तर में सुधार हेतु कृत्रिम विधि द्वारा पकाने की प्रौद्योगिकी
- गन्ना कृषि में पादप वृद्धि नियामकों का प्रयोग

उत्तम वर्ष 2012 में संस्थान की चीनी मिल एवं किसानों को प्रमुख देन

संस्थान द्वारा किसानों को नव विकसित एवं अच्छी गन्ना प्रजातियाँ आसानी से उपलब्ध कराने की व्यवस्था सुनिश्चित करने का सफल प्रयास

गन्ना अनुसंधान एवं विकास में अवरोधक के रूप में ऊभर कर आए नीतिगत मुद्दों को सुलझाने के लिए डा. एस. सोलोमन, निदेशक, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान ने काफी प्रयास किये है। एक नीतिगत मुद्दें के अर्न्तगत उत्तर प्रदेश सरकार, प्रदेश में बुआई के लिए केवल उन नई विकसित प्रजातियों की ही संस्तुति करती थी जो उत्तर प्रदेश गन्ना शोध परिषद, शाहजहाँपुर के माध्यम से प्रस्तुत की जाती थी। चूँकि उत्तर प्रदेश गन्ना शोध परिषद, शाहजहाँपुर राज्य सरकार की संस्तुति के लिए स्वयं प्रस्तुत कर्ता एवं लाभार्थी दोनों की ही भूमिका अदा करता है अतः ऐसी व्यवस्था के अर्न्तगत भारत सरकार की केन्द्रीय गन्ना प्रजाति संस्तुति समिति, द्वारा उत्तर प्रदेश के लिए संस्तुत प्रजातियाँ प्रदेश में बुआई के लिए संस्तुत नहीं हो पा रही थी।

निदेशक पद संभालने के बाद डा. सोलोमन ने इस मुद्दे की गम्भीरता को समझते हुए गन्ना विभाग के गन्ना आयुक्त, गन्ना सचिव तथा अन्य उच्च अधिकारियों के साथ गहनता से विचार विमर्श किया एवं केन्द्रिय गन्ना प्रजाति संस्तुति समिति द्वारा स्वीकृत गन्ना प्रजातियों को प्रदेश में बुआई के लिए संस्तुत न करने से चीनी मिलों एवं किसानो को होनें वाले नुकसान से भी परिचित करवाया। भारतीय कृषि अनुसंधान परिषद के दो राष्ट्रीय स्तर के दो गन्ना शोध संस्थानों, भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान, लखनऊ एवं गन्ना प्रजनन संस्थान कोयम्बटूर तथा राजकीय स्तर के कई अन्य शोध संस्थानों द्वारा विकसित कई उन्नत प्रजातियों को उत्तर प्रदेश में बुआई के लिए उ. प्र. के गन्ना विभाग एवं प्रदेश के मुख्यमंत्री ने स्वीकृति प्रदान कर दी है। भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान के इस प्रयास से जहाँ चीनी मिल क्षेत्र में उच्च उत्पादकता एवं उच्च शर्करा की अगेती किस्में उपलब्ध होगीं वहीं पर किसानों को अगेती कोलख 94184 जैसी शीघ्र पकने वाली किस्मों को उगाने के लिए अधिक गन्ना मूल्य भी मिलेगा। अब ऐसी व्यवस्था सुनिश्चित हो गई है जिससे केन्द्रीय समिति द्वारा संस्तुत गन्ना प्रजातियों को बिना किसी शर्त एवं विलम्ब से प्रदेश में बुआई के लिए संस्तुति किया जा सकेगा एवं इन नयी प्रजातियों के बीज का बहुगुणन भी शीघ्र सुनिश्चित हो पाएगा। ऐसी व्यवस्था चीनी उद्योग तथा किसानों के लिए लाभकारी होने के साथ–साथ गन्ना प्रजनन विज्ञानिकों के लिए भी नई–नई प्रजातियाँ विकसित करने में प्रेरक सिद्ध होगी। पूर्ण रूप से सक्षम नव विकसित एवं अच्छी गन्ना प्रजातियों को प्रतिस्पर्धा के आधार पर बिना किसी भेदभाव के प्रदेश के चीनी मिल क्षेत्रों में फैलने का पूरा मौका मिलेगा।

प्रकाशक : डा. एस. सोलोमन, निदेशक
संकलन एवं सम्पादन : डा. अश्विनी कुमार शर्मा, श्री ब्रह्म प्रकाश एवं डा. जी.के. सिंह

भारतीय गन्ना अनुसंधान संस्थान
रायबरेली रोड, पोस्ट दिलकुशा, लखनऊ - 226 002
वेबसाइट : www.iisr.nic.in, ई-मेल: iisrlko@sancharnet.in
☎ +91-522-2480726, फैक्स: +91-522-2480738